टिप्पणी

242hi03

3

ताल के तत्त्व

चित्र, मूर्ति एवं स्थापत्य जैसी दृश्य कलाओं का आस्वादन संरचना प्रक्रिया के पश्चात् होता है। इनकी तुलना में संगीत एक ऐसी कला है, जिसका आस्वादन संरचना प्रक्रिया के साथ-साथ होता है। संगीत का निर्धारण श्रव्य रूपों की गति के द्वारा होता है जिससे कल्पित अथवा प्रतीयमान समय का आभास होता है। जिस प्रकार दृश्य कलाओं के लिए स्थान के माप की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संगीत कला के लिये समय के माप की आवश्यकता होती है। हिन्दुस्तानी संगीत के अंतर्गत बंदिश किसी विशेष ताल अथवा निश्चित अंतरालों के गति क्रम के द्वारा प्रतिष्ठित होती है। ताल के माध्यम से एक अंतराल के गुजरने पर दूसरे अंतराल का आगमन होने के कारण गति का आभास होता है। इन अंतरालों के बीच की अवधि समय के माप का बोध कराती है। यह प्रतीयमान समय होता है जो सांगीतिक रचना के अंतर्गत निर्मित होता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप–

- ताल की अवधारणा एवं अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे;
- ताल को परिभाषित कर सकेंगे;
- ताल के प्राचीन एवं आधुनिक तत्त्वों की गणना कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- ताल के प्रस्तुत तत्त्वों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- निर्धारित तालों के बोलों का उच्चारण कर सकेंगे।

टिप्पणी

3.1 ताल की अवधारणा एवं अर्थ

बंदिश के अंतर्गत ताल के द्वारा सांगीतिक समय के गुजरने का संकेत मिलता है। यह प्रक्रिया गति का आभास कराती है जिससे संगीत को एक सजीव रूप की भांति प्रकृति प्राप्त होती है। हिन्दुस्तानी संगीत में ताल को वह नींव माना जाता है, जिस पर संगीत की स्थापना होती है। राग की रचना एवं बढ़त ताल के नियमित चक्र के अंतर्गत प्रस्तुत होती है। यद्यपि ताल का चक्र निश्चित होता है, तथा प्रत्येक चक्र की समाप्ति पर ताल के सम पर भिन्न-भिन्न प्रकार से पहुँचना स्वयं एक उद्देश्य बन जाता है।

3.2 ताल की परिभाषा

'ताल' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत में **'तल्'** धातु से बताई जाती है, जिसका अर्थ वह आधार अथवा धुरी है जिस पर कोई वस्तु प्रतिष्ठित होती है। **संगीत रत्नाकर** में ताल को परिभाषित करते हुए पं. शार्ङ्गदेव कहते हैं, 'ताल' शब्द तल् धातु में धञ् प्रत्यय से बनता है, जिसका अर्थ है वस्तु को प्रतिष्ठित करना। उसी प्रकार, गीत, वाद्य एवं नृत्य को प्रतिष्ठित करने वाला आधार 'ताल' है।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. एक प्रत्यक्ष कला के रूप में संगीत का आस्वादन किस प्रकार होता है।
2. दृश्य कलाओं का आस्वादन किस प्रकार होता है?
3. दृश्य कलाओं के संदर्भ में जिस प्रकार स्थान के माप की आवश्यकता होती है, इसकी तुलना में प्रत्यक्ष कलाओं में किसकी आवश्यकता होती है?
4. वह आधार क्या है जिस पर गीत, वाद्य तथा नृत्य प्रतिष्ठित हैं?

3.3 ताल के आधुनिक तत्त्व

प्राचीन काल में ताल के दस तत्त्व प्रयोग में थे जिन्हें सामूहिक रूप से **'ताल दश प्राण'** कहा जाता था, यथा- **काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति** एवं **प्रस्तार**। ताल के आधुनिक तत्त्वों में **आवर्तन, मात्रा, लय, बोल, ठेका, विभाग, सम, खाली** एवं **ताली** का समावेश है। किसी भी ताल को पहचानने व समझने के लिये इन तत्त्वों की जानकारी का होना आवश्यक है। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है:-

3.3.1 आवर्तन- प्रस्तुत ताल का सम्पूर्ण चक्र आवर्तन कहलाता है। इसकी पुनरावृत्ति एक से अधिक बार हो सकती है। उदाहरण के रूप में, तीन ताल का आवर्तन इस प्रकार है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ठेका/बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
	x				2				0				3			

3.3.2 मात्रा – ताल की वह इकाई जो सांगीतिक समय के माप का निर्देश करे, मात्रा कहलाती है। भिन्न तालों में मात्राओं की समान संख्या सम्भव है। उदाहरण के लिये, चौताल तथा एकताल, दोनों में ही बारह मात्राएं हैं। परन्तु इन दोनों का प्रयोग संगीत की भिन्न विधाओं में होता है। चौताल का प्रयोग ध्रुपद में पखावज पर तथा एकताल का प्रयोग खयाल में तबले पर किया जाता है। इनमें प्रयुक्त बोल कथित विधाओं के अनुरूप होते हैं। चौताल तथा एकताल में प्रयुक्त मात्रा व बोलों का लिपिबद्ध रूप निम्नांकित है:

चौताल

(पखावज)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका/बोल	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	ति	ट	गदि	गन
	x		0		2		0		3		4	

एकताल

(तबला)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका/बोल	धिं	धिं	धागे	तिर	किट	तू	ना	कत	-ता	धागे	तिर	किट	धिं	ना
	x		0			2		0		3			4	

3.3.3 लय – सांगीतिक समय की गति या रफ्तार को **लय** कहा जाता है। **लय** तीन प्रकार की होती है:-

विलंबित, मध्य तथा **द्रुत**

(i) **विलंबित लय** – धीमी गति की लय को विलंबित कहते हैं।

(ii) **मध्य लय** – विलंबित से दोगुनी जलद गति की लय को मध्य कहते हैं।

(iii) **द्रुत लय** – मध्य से दोगुनी जलद गति की लय को द्रुत कहते हैं।

3.3.4 बोल – ताल बजाते समय उत्पन्न ध्वनि को दर्शाने वाले शब्दों को बोल कहते हैं। ये निरर्थक अक्षर होते हैं, जैसे धा, धिं, तिरकिट इत्यादि। प्राचीन समय में इनके लिये 'पाटाक्षर' शब्द का प्रयोग होता था।

टिप्पणी

3.3.5 ठेका – बोलों अथवा ताल के शब्दों के संपूर्ण समूह से **ठेका** बनता है। जिस प्रकार सांगीतिक रचना या बंदिश की बढ़त होती है, उसी प्रकार ठेका ताल की मूल संरचना है जिसे 'टुकड़े' एवं 'तिहाई' के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है।

3.3.6 विभाग – ताल का ठेका विभिन्न खंडों में विभाजित होता है, जिन्हें 'विभाग' कहते हैं। ताल की मात्राओं की संख्या के आधार पर भिन्न तालों में विभागों की संख्या भिन्न होती है। उदाहरण स्वरूप, सोलह मात्रा से युक्त तीन ताल में चार विभाग होते है, तथा सात मात्रा से युक्त रूपक में तीन विभाग होते हैं। यह आवश्यक नहीं कि विभागों के बीच का अंतराल समान हो। जैसे कि ऊपर दिये उदाहरण के अनुसार तीन ताल में चार विभाग समान अंतराल के हैं। प्रत्येक की चार मात्राएं हैं, यथा–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
x				2				0				3			

दूसरी ओर रूपक ताल में दो विभाग दो–दो मात्राओं से युक्त हैं व एक तीन मात्राओं से युक्त है, यथा–

1	2	3	4	5	6	7
तिं	तिं	ना	धिं	ना	धिं	ना
0			1		2	

3.3.7 सम – ताल की वह प्रारम्भिक मात्रा जिस पर संपूर्ण गति क्रम का बल दिया जाता है, सम कहलाती है। भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के अनुसार इसका चिह्न (x) होता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है, कि पहले बताए गये रूपक ताल के उदाहरण में सम पहली मात्रा पर बताया गया है, परन्तु मौखिक रूप से ताल प्रस्तुत करने पर इसे खाली के समान दर्शाया जाता है। इसे अपवाद स्वरूप समझना चाहिये क्योंकि सामान्यतया, सम को ताली के समान दर्शाया जाता है। क्रियात्मक रूप से तबला वादन एवं गायन दोनों साथ ही साथ इसी मात्रा से आरम्भ होते हैं, अत: इसे सम बताया गया है।

3.3.8 खाली – ताल की वह मात्रा जो गति क्रम के चक्र को संतुलित करने हेतु सम के प्रतितुल्य का काम करती है, खाली कहलाती है। भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के अनुसार इसका चिह्न (0) होता है। हस्त मुद्राओं के द्वारा ताल के ठेके के मौखिक रूप से उच्चारण करते समय खाली को हथेली ऊपरी दिशा की ओर किये हुए दर्शाया जाता है। खाली एक से अधिक हो सकती है।

3.3.9 ताली– ताल की वह मात्रा जो आघात के स्थान का संकेत करती है, ताली कहलाती हैं। सामान्यतया ये एक से अधिक होती हैं, तथा विभाग की आरम्भिक मात्राएं होती हैं। इस प्रकार, सम, पहली, ताली तथा खाली को छोड़कर अन्य की संख्या 2, 3 आदि होती है।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. ताल की वह इकाई जो सांगीतिक समय के माप का निर्देश करती है, क्या कहलाती है?
2. सांगीतिक समय की गति या रफ्तार को क्या कहते हैं?
3. किसी प्रस्तुत ताल का संपूर्ण चक्र जिसकी पुनरावृत्ति एक से अधिक बार हो सकती है, किस नाम से जाना जाता है?
4. ताल बजाते समय उत्पन्न ध्वनि को दर्शाने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?
5. बोलों अथवा ताल के शब्दों के संपूर्ण समूह से क्या बनता हैं?
6. ताल की वह प्रारंभिक मात्रा जिस पर संपूर्ण गतिक्रम का बल दिया जाता है, क्या कहलाती है?

3.4 निर्धारित तालों के बोल

(क) तीन ताल

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ठेका/बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
	x				2				0				3			

(ख) एकताल

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका/बोल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
	x		0		2		0		3		4	

(ग) दादरा

मात्रा	1	2	3	4	5	6
ठेका/बोल	धा	धी	ना	धा	ती	ना
	x			0		

टिप्पणी

(घ) कहरवा

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
ठेका/बोल	धा	गे	न	ति	न	क	धिं	न
	x		2		0		3	

(ङ) झपताल

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ठेका/बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
	x		2			0		3		

पाठगत प्रश्न 3.3

1. **सम** के अतिरिक्त तीनताल में अन्य किन मात्राओं पर ताली आती है?
2. **एकताल** में मात्राओं की क्या संख्या है?
3. **दादरा** में खाली किस मात्रा पर आती है?
4. **झपताल** में मात्राओं की क्या संख्या है?

आपने क्या सीखा

हिन्दुस्तानी संगीत का एक अभिन्न अंग '**ताल**' है, जिसमें गतिक्रम निहित है। गतिक्रम हृदय-गति एवं श्वसन जैसी जीवन प्रक्रियाओं में स्वभावत: विद्यमान है। अत: यह जीवन की स्वाभाविक गति को प्रतीकात्मक दृष्टि से सांगीतिक रूप में रूपान्तरित करता है। यह गति एक प्रतीयमान समय का आभास कराती है। ताल के एक अंतराल के गुजरने पर तथा दूसरे अंतराल का आगमन होने पर प्रतीयमान समय का माप होता है, जो सांगीतिक रचना के अंतर्गत निर्मित होता है।

ताल वह धुरी है जिस पर हिन्दुस्तानी संगीत की स्थापना हुई है। इसके तत्त्वों में **आवर्तन, मात्रा, लय, बोल, ठेका, विभाग, सम, खाली,** तथा **ताली** का समावेश है।

पाठांत प्रश्न

1. **ताल** के माध्यम से गति का आभास किस प्रकार होता है?

टिप्पणी

2. संगीत रत्नाकर के अनुसार ताल को परिभाषित कीजिये। प्राचीन समय में ताल के तत्त्व क्या थे?

3. क्या भिन्न तालों में मात्राओं की संख्या समान हो सकती है? उदाहरण सहित दर्शायें।

4. **लय** किसे कहते हैं?

5. क्या **ताल** के विभाग असमान अंतराल के हो सकते हैं? उदाहरण सहित दर्शायें।

6. **खाली** तथा **ताली** से आप क्या समझते हैं?

7. निम्न में से किन्हीं दो के बोलों का वर्णन कीजिये- **तीन ताल, कहरवा, दादरा, झपताल, एकताल**

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. संगीत का आस्वादन संरचना प्रक्रिया के साथ-साथ होता है।
2. दृश्य कलाओं का आस्वादन संरचना प्रक्रिया के पश्चात् होता है।
3. दृश्य कलाओं के संदर्भ में जिस प्रकार स्थान के माप की आवश्यकता होती है, इसकी तुलना में संगीत कला में समय के माप की आवश्यकता होती है।
4. ताल वह आधार है जिस पर गीत, वाद्य तथा नृत्य प्रतिष्ठित हैं।

3.2

1. मात्रा।
2. लय।
3. आवर्तन।
4. बोल।
5. ठेका।
6. सम।

टिप्पणी

3.3

1. पाँच तथा तेरह।
2. बारह।
3. चौथी।
4. दस।

पारिभाषिक शब्दावली

1. **बंदिश** – सांगीतिक रचना।
2. **ध्रुपद** – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विधा जिसकी संगत पखावज के साथ होती है।
3. **ख्याल** – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विधा जिसकी संगत तबले के साथ होती है।
4. **प्रत्यक्ष कला** – प्रदर्शनकारी कला जिसका आस्वादन रचना प्रक्रिया के दौरान किया जाता है।
5. **धुरी** – एक निश्चित बिंदु जिस पर कोई वस्तु टिकी हो।
6. **तिहाई** – स्वरों अथवा बोलों का विशेष समूह जिसे तीन बार प्रस्तुत किया जाये।
7. **टुकड़े** – ठेके के अंतर्गत नवीनता लाने के लिये तबले पर बजाये जाने वाले बोलों के समूह।
8. **दृश्य कला** – वह कला जिसका आस्वादन (नेत्रों के द्वारा) रचना प्रक्रिया के पश्चात् किया जाये।
9. **प्रतीयमान समय** – वास्तविक समय नहीं, अपितु सांगीतिक रूप के अंतर्गत निर्मित समय।